Bhajan

12

मेरे मन मन्दिर में राम बिराजें

मेरे मन मन्दिर में राम बिराजें,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ।

अधिष्ठान मेरा मन होवे,
जिसमें राम नाम छवि सोहे ।
आँख मूंद के दर्शन होवे,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

सांस सांस गुरु मंत्र उचारुं,
रोम रोम से तुम्हे पुकारुं ।
आँखिन से बस तुम्हे निहारुं,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

औषधि राम नाम की खाऊँ,
जनम मरन के दुख बिसराऊँ ।
हंस हंस के तेरे घर जाऊँ,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

बीते कल का शोक करुँ ना,
आज किसी से मोह करुँ ना ।
आने वाले कल की चिन्ता,
नही सताये हमको स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

राम राम भज कर श्रीराम,
करें सभी जन उत्तम काम ।
सबके तन हों साधन धाम,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

आँखें मूंद के सुनु सितार,
राम राम सुमधर झंकार ।
मन में हो अमृत संचार,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

अब तुम बिन को मोरि राखे लाज

अब तुम बिन को मोरि राखे लाज,
मेरे राम गरीब निवाज ॥

मैं असहाय अधम अग्यानी पतितन को सिरताज,
पतित उधारन विरदु आपनो, सिद्ध करो महाराज ॥
अब तुम बिन . . .

जिन जिन ध्याये तिन तिन पाये अजामील गज व्याध,
हमरी बारी जाय छिपे तुम किन कुंजन में आज ॥
अब तुम बिन . . .

धीरज दया क्षमा शुचिता दम संयम सच को ज्ञान,
दो हमको ये सद् गुन सारे कृपा करो महाराज ॥
अब तुम बिन . . .

मैं अपराधी हूँ बड़ा अवगुन भरा विकार,
क्षमा करो अपराध सब अपना विरद विचार ॥
अब तुम बिन . . .

गुरु चरनन में ध्यान लगाऊं

गुरु चरनन में ध्यान लगाऊं, ऐसी सुमति हमें दो दाता ।

मैं अधमाधम पतित पुरातन, किस विधि भव सागर तर पाऊँ,
ऐसी दृष्टि हमें दो दाता, खेवन हार गुरु को पाऊँ ॥
गुरु चरनन में . . .

गुरु पद नख की दिव्य ज्योति से, निज अंतर का तिमिर मिटाउँ,
गुरु पद पदम पराग धूल से, अपना मन निर्मल कर पाऊँ ॥
गुरु चरनन में . . .

शंखनाद सुन जीवन रण का धर्म युद्ध में मैं लग जाऊँ,
गुरु पद रज अंजन आँखिन भर, विश्वरूप हरि को लख पाऊँ ॥
गुरु चरनन में . . .

भटके नहीं कहीं मन मेरा, आँख मून्द जब उनको ध्याऊँ,
पीत गुलाबी शिशु से कोमल, गुरु के चरन कमल लख पाऊँ ॥

गुरु चरनन में . . .

गुरु आज्ञा में निश दिन रहिये

गुर्रु ब्रह्मा गुर्रु विष्णु गुर्रु देवो महेश्वरः
गुर्रु साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः

गुरु आज्ञा में निश दिन रहिये, जो गुरु चाहे सोयि सोयि करिये ।

गुरु चरनन रज मस्तक दीजे, निज मन बुद्धि शुद्ध कर लीजे,
आँखिन ज्ञान सुअंजन दीजे, परम सत्य का दरशन करिये ॥
गुरु आज्ञा में . . .

गुरु अँगुरी दृढ़ता से धरिये, साधक नाम सुनौका चढ़िये,
खेवटिया गुरुदेव सरन में, भव सागर हँस हँस के तरिये ॥
गुरु आज्ञा में . . .

गुरु की महिमा अपरम्पार, राम धाम में करत विहार,
ज्योति स्वरूप राम दरशन को, गुरु के चरन चीन्ह अनुसरिये ॥
गुरु आज्ञा में . . .

तुझसे हमने दिल है लगाया

तुझसे हमने दिल है लगाया जो कुछ है सो तू ही है,
हर दिल में तू ही है समाया जो कुछ है सो तू ही है ॥

तू धरती है तू ही अम्बर, तू पर्बत है तू ही सागर,
कठपुतले हम, तू नट नागर, जड़ चेतन सब ही को नचाया ॥
जो कुछ है सो तू ही है . . .

सांस-सांस में आता जाता, हर धड़कन में याद दिलाता,
तू ही सबका जीवन दाता, रोम-रोम में तू ही समाया ॥
जो कुछ है सो तू ही है . . .

बजा रहा है मधुर मुरलिया, मन वृन्दावन में सांवरिया,
सबको बना दिया बावरिया, स्वर में ईश्वर दरस कराया ॥
जो कुछ है सो तू ही है . . .

हारिये न हिम्मत बिसारिये न राम

हारिये न हिम्मत बिसारिये न राम ।

चिंता मणि हरि नाम है सफल करे सब काम,
महा मंत्र मानो यह राम राम श्री राम ॥

हारिये न हिम्मत बिसारिये न राम,
तू क्यों सोचे बन्दे सब की सोचे राम ॥
हारिये न हिम्मत . . .

दीपक लेकर हाथ में सतगुरु राह दिखाय,
पर मन मूरख बावरा आप अंधेरे जाय ॥
हारिये न हिम्मत . . .

पाप पुन्य और भले बुरे की वोही करता तोल,
ये सौदे नहीं जगत हाट के तू क्या जाने मोल ॥
हारिये न हिम्मत . . .

जैसा जिसका काम पाता वैसे दाम,
तू क्यों सोचे बन्दे सब की सोचे राम ॥
हारिये न हिम्मत . . .

राम ही राम बस राम ही राम

राम ही राम बस राम ही राम ।
और नाही काहू सो काम ॥
राम ही राम ...

तन में राम तेरे मन में राम ।
मुख में राम वचन में राम ।
जब बोले तब राम ही राम ॥
राम ही राम ...

जागत सोवत आठहुँ याम ।
नैन लखें शोभा को धाम ।
ज्योति स्वरुप राम को नाम ॥
राम ही राम ...

कीर्तन भजन मनन में राम ।
ध्यान जाप सिमरन में राम ।
मन के अधिष्ठान में राम ॥
राम ही राम ...

सब दिन रात सुबह और शाम ।
बिहरैं मन मधुबन में राम ।
परमानन्द शान्ति सुख धाम ॥
राम ही राम ...